गर्द का तूफ़ान

पाकिस्तान की पृष्ठभूमि पर आधारित दोस्ती, विश्वासघात और भाईचारे की एक दास्तान

इक़बाल ख़ुर्शीद

गर्द का तूफ़ान

इक़बाल ख़ुर्शीद

अनुवाद

तारिक़

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2026

© इक़बाल ख़ुर्शीद

किताब के बारे में

“गर्द का तूफ़ान” एक साहिली शहर की अँधेरी गलियों में जन्म लेने वाली लहू-रंग दास्तान है, जिसमें कराची गैंग वॉर की अँधेरी दुनिया में उम्मीद, निराशा, दोस्ती और धोखेबाज़ी की कड़वी मगर सच्ची तस्वीर पेश की गई है।

यह कराची के दो नौजवानों- ओज़ी और विक्की- की कहानी है, जिनकी आँखों में कई सपने हैं, मगर आर्थिक परेशानियाँ और बिगड़े हालात उन्हें एक सियासी पार्टी के मिलिटेंट विंग का हिस्सा बना देते हैं। इसके बाद वे हर बढ़ते क़दम के साथ अपनी मासूमियत खोते जाते हैं और धीरे-धीरे अपनी बेरहमी को पहचानने लगते हैं। लेकिन जब हालात बदलते हैं और सियासी सहारा खत्म हो जाता है, तो उन पर ऐसी मुसीबतें टूट पड़ती हैं कि बरसों की दोस्ती में दरार आ जाती है।

मशहूर कथाकार, पत्रकार और फ़िल्म समीक्षक इक़बाल खुर्शीद के क़लम से निकले इस उपन्यास में कराची की आधुनिक सियासी तारीख, हिंसा की लहर, क़त्ल-ओ-ग़ारत और समाज के टूटते ढाँचे की सजीव झलक मिलती है।

यह उपन्यास 1980 से 2015 तक के कराची को सामने लाता है, जहाँ उर्दू, पश्तो और सिंधी बोलने वाले समुदायों के बीच बढ़ते सियासी फासलों ने कई बार ख़ून-ख़राबा और दंगों को जन्म दिया। इस कहानी में कराची में बसे मुहाजिरों के कल्चर, सियासी

झुकाव, सन 1986 का अलीगढ़ हादसा, सन 2007 का 12 मई का हादसा, बढ़ती धार्मिक कट्टरता और मुशर्रफ़ दौर के अलग-अलग पहलुओं का भी ज़िक्र मिलता है।

लेखक ने संक्षिप्तता को बरतते हुए एक ग़रीब मिडिल क्लास इलाके की पृष्ठभूमि में बड़ी कुशलता से अपराध की कहानी को साहित्यिक अंदाज़ में बयान किया है। उपन्यास में धार्मिक ग्रंथों के अंदाज़ से प्रभावित प्रभावशाली प्रतीकों का भी इस्तेमाल किया गया है। इस उपन्यास को पाकिस्तान और भारत, दोनों जगह के आलोचकों और पाठकों की ओर से सराहा गया है।

धूल भरी हवाओं और उड़ते सूखे पत्तों के बीच... वह धूल में लथपथ इटावा होटल के दरवाजे पर नमूदार हुआ।

केतली से उठती भाप के पीछे से मुश्की की बूढ़ी आँखों ने उसे वैसे ही देखा, जैसे ठीक सोलह साल पहले देखा था- जब वह नया-नया था और अपना एक हाथ पतलून की जेब में रखा करता था।

मद्धम पड़ती रोशनी में, बोझिल कदमों के साथ उसका अपनी तयशुदा जगह पर आकर ढेर हो जाना और कमर से लगा पिस्तौल निकालकर मेज़ पर रखना, बर्तन धोते गुलफ़ाम और दही के कूंडे पर झुके मज्जन को चौंका न सका। नहीं, इसमें कुछ भी नया नहीं था।

वह तो गरजते बादलों और हवाओं के शोर के साथ उठता वह विलाप था, जिसने अंधेरे को और भी गहरा कर दिया और दीवारों में दरारें डाल दीं।

"साले ने मेरी घेराबंदी की थी," उसकी आवाज़ रुंधी हुई थी और उसमें बरसों की थकान थी। "साला, मुझे ठिकाने लगाना चाहता था।"

मुश्की ने, जो काली पड़ चुकी केतली से जादू जगाना जानता था, धुंधलाते मंज़र के उस दर्द को भांप लिया; उसकी आँखों ने उस बेचेहरा शख्स को भीतर ही भीतर दीमक की तरह चाटे जाते देखा था।

जुर्म की दीमक... जिसकी हरकत एक अंतहीन दायरे को जन्म देती है।

वह सिर झुकाए धीरे-धीरे रो रहा था। हवा का एक तेज़ झोंका बाहरी दीवार से टकराया।

"साले विक्की ने... मेरी घेराबंदी की थी।"

शायद उसने मुट्ठियाँ भींच ली थीं। शायद उसकी नज़र सामने वाली कुर्सी पर टिकी थी, जो उस वक्त खाली थी। वह कुर्सी... जिस पर विक्की सोलह साल पहले आकर बैठा था।

वह कुर्सी... जहाँ कल दोपहर तक वह मौजूद था और उसने भी अपना पिस्तौल मेज़ पर रखा था।

आसमान में शोर उठा।

अतीत की केतली में उबाल आया।

तूफान और भी गहरा हो गया।

धूल भरी हवाओं और उड़ते सूखे पत्तों के बीच... मुश्की ने कायनात को कांपते हुए देखा।